इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळें.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ~~४३१/२०.१०~~ (५५१)

ग्रंथ नाम भारत.

विषय कथा-पुराणे.

" Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

॥श्री॥१॥

विराट पर्वं

बोधि ॥१२९॥ पत्र १६

श्री गणेशाय नमः॥ जो वेद बोलिजे त्रिविधि॥

जो बैसोनी मायादेवीच्या पाठि॥ ब्रह्मा विष्णु महे

श्वर पोटि॥ जन्म विलिसाळके॥१॥ कौतुके टेउ

नीयानाचे॥ रंजवि सा[illegible]रता बियाभावे॥ लाव्य

कपाळ कि खश्रावे॥ [illegible]तु नीयापहुड वियोये

तया आदिपुरुषा[illegible]मी॥ कीतो विश्वंभर

गुरुनामी॥ नमस्कारिले मनोथमी॥ सावथ

हृदेशोतया॥ आनाचे चौथ विराठपर्वी॥ नवर

से सुधेच्या सुधार्णव॥ श्रवणेंद्रियाचे वैभवा॥

अतिअभिनवनंवदवे ॥४॥ स्वंस्तठेकोनसके
गगनि ॥ थावनकादवेसमुद्रजीवनी ॥ विश्वंभर
वेगंयुसदनि ॥ दुष्टग्यानदिवेना ॥५॥ षुद्धअ
ल्पकेबोलतिबचने [illegible] हेरअथवानेपात
पणे ॥ गुरुग्नातिक [illegible] मादेग ॥ प्रेमकरीतीया
मंथायाग ॥ दीप्रया [illegible] रवीच्यानिरा ॥ कावकु
पीकाभरीलीचतुरा ॥ कावडिनेतीरामेश्वरा ॥६॥
अभिषेकार्थआवडि ॥७॥ देवीबिसबियंसथो
नीदेखा ॥ व्यासेकाढिलेअंमृतोदका ॥ माहो

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(2A)

रारशब्दाच्याकुपीका ॥ भरणित्वो कामज हातोटी ॥
प्रसार पाटविलाग्रीतिं ॥ तोश्री कारोणि संत श्रो ॥
तिगकर्णद्वारापरमश्रेणी ॥ हृदयेलिंगासिंचु
नि ॥ शब्दादरावरयेज रस्य वाधु ॥ सरल्यानं
तरेकुरनेदयु ॥ [illegible] विधोयु ॥ विचार
विवरीतोदकौ [illegible] ॥ धुलागि दैयपदी ॥ श्रो
त्रविवेकाचा उदे [illegible] मर्हेववांकुडि ॥
प्रर मजदे इजे ॥ ११ ॥ नश्चचयेकेइसाहे यासे ॥ कव
नेगा इक्रमाव केसे ॥ शात्रु मि सखलियारक्षोपे ॥
महल्देसनिपाउति ॥ करो उभरो अकुमाळ ओ ये

Rajwade Sanshodhan Mandal Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan Mumbai.

(3)

ावे ।। तरी पुढती बा राक्र मोनित्ते रावे ।। ऐसक
रितकरित स्वभावे ।। आयुष्य गेलेयानकि ।।१३।।
धौम्य त्सदय विचारत सुमती ।। काय साध्रम चितो
वृत्ति ।। होनार ते प्रार[illegible]ति ।। आपे आप होत
से ।।१४।। यक्ष स्विय ब[illegible] ।। हे पपुलिठ ति 2
ळ आपे रसि ।। नाम पा[illegible]डे रसि ।। तेहि दैवकेन रे
द्रो ।।१५।। कंक नाम देवि जे धर्मी ।। बल्लव आति
धान बक्रियाभिमा ।। वेऊनि अंगने विप्रलभा ।।
बहंनदी अर्जुनाम द्यो ।। ग्रंथिक नाम नकुळाते ।।

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

॥श्री॥१४॥

विराट पर्व

(3A)

तंत्तिपाळ सहदेवाते॥ सैरंध्रि नाम द्रोपदिते॥ पृ
दकन्निभ नाम पार्थाते॥१७॥ धर्मराजा विये च राये
होतोसे योगी अधिकारी॥ ऐसे बोलुनि विराटपु
नगरी॥ विराटाते सेवि॥१८॥ कोटल्या सात
वासवसंवछर॥ पुरुषवेषे नाना विच्यार॥ राजप्र
पिंच्या प्रकार॥ साध्य असाध्य आघावया॥१९॥
ऐसे धौम्य अनुवादता॥ परम संतोष कुंतीसु
ता॥ ब्राह्मणांसि गिया समस्ता॥ आज्ञा देउनि पाठ

Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan Mumbai

(५)

वि॥२०॥ कोन्ही पांचाळदेशावस्थि॥ कोन्हि समस
पुरीम्पति॥ कृष्ण वसुदेव संगति॥ वर्षुयेक कमो
वे॥२१॥ कोन्हि धाडिले हस्तनापुरा॥ खुद मल्हार
कोरवेश्वरा॥ असावचासा युधिष्ठिरा॥ कोटकैसा
जानवे॥२२॥ इंद्रसेन सारथ्यासहित॥ सवक सोयेरप
रमआप्त॥ द्वारकेधाडिले कृष्णनाथ॥ म्हणभाव
पाळितु॥२३॥ द्रौपदी परिचारिका सखिया व
सियाअनेका॥ धृष्टद्युम्नटउनिदरवा॥ पाळियेल्मा
सुरवाउ॥२४॥ अग्निहोत्रसासुभ्रिसि॥ धौम्यजा

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

4A

ता पांचा कासि।। नितिसांगे पांडवासि।। विराठ संगी
वसावया।।२५।। नावर पुथार पुष्य।। कोन्हा होने दाव
ज्ञान।। दिना हुनि परम दीना।। ऐसे लोका दावावे।।२६।।
राउ निचा तुर्ये कु शावते।। मुख्ये वना निजे प्रभुत।। स
मर्थ बोलिले जे न घडे ... त्यि रादीमतिष्या।।२७।।
असत्य न बोलीजे सर्वे ... यरिज निर्मळ निर्लोभ
ता।। इंद्रिय नेम निष्कळता।। होय वल्लभ रायाते।।२८।।
राजा अचाट कार्ये सांग।। न करवे ल्हणोनि न व्हि
जे माग।। स्वभावा बोळ रेवानी याग।। तोचि वल्लभ रायो
ता।।२९।। राज स्त्रीयेसी संवाद।। पुत्र मित्रासि विनोद।।

Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule ... Mumbai.

(6)

दुनेले ज्ञान ॥ नेला यासीह.दा अज्ञान ॥ ज्यास्वसु
खिमधुरवचन ॥ तो खि मौन्य विस्वात ॥ ४० ॥ असो
तुह्मा जाला या प्रती ॥ काय बोलो लो बहु सावयुक्ति ॥
सांगितले नयो स्विपरि ति [illegible] ज्ञातवास के मा वा ॥ ४१ ॥
हृदरधर लिहु छम [illegible] मरलि असावे अहल
त्रि ॥ त्रयोदशावरूषा विन [illegible] ति ॥ खिभ भेटियतस ॥ ४२ ॥
कैसे सांगा निकुरून रेशा ॥ धौम्य गेला पांचा के दशा ॥
धर्म ह्मणे विचार कैसा ॥ पुढे करणे बंधु हो ॥ ४३ ॥
अज्ञातवास परम्य हीवस्ति ॥ उदरनिर्वाहिक

"Joint Project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

6A

वऱ्हेरिती ।। पारखही म्हणती रये अखि ।। संकट
काळी असेना ।। ६ ।। धर्मलक्षणे मि निवेदिन वाच्या ।।
सभापंडित पांडवाच्या ।। जोतिर्ब्राह्मणास द्विजेच्या ।।
संपन्न असे मज पासी [illegible] ।। रत्नकुपरिक्षे मि कु
शळ ।। रेखकु जाणे चतुर [illegible] बुद्धिबळयुक्ति सबका ।।
मज समान असेना ।। [illegible] रत्नपरीक्षा राजनिति ।।
समर जाणे विचार युक्ति ।। सहज घडत्या संगति ।।
जाणावेल स्वभाव ।। ९ ।। बोधुनिया न्रपाचे मन ।। बु
द्धि कौशल्य काळ क्रमिण ।। मि म्हणे सुजन संत ।। मि हिक

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

रिग्रान्तपाते ॥४८॥ पाक कर्त्ता बल्लव नामा ॥ धर्मा चुरी
मीसुदकमा ॥ भक्ष्य भोज्य अमृतोपमा ॥ निष्फज खिन
स्वहस्ते ॥४९॥ सीमाऽसंगति निदेशु ॥ धारीरिके लाबका
श्यासु ॥ ता हि दाउ निउ [illegible] ॥ रुपज विनतुज राया ॥५०॥
ऐसे बोलताचे भलाकार ॥ [illegible] का रिकराजेश्वर ॥ अर्जु
न म्हणे ऐको किच्यारे ॥ आ[illegible] हे परियेसा ॥५१॥ विषय ६
कउव सिंश्रापु ॥ तो प्रायुचकरावे या निर्लभु ॥ आंगिक
वगानि अंग नावेसु ॥ राजयाते भेटेन ॥५२॥ नाटकशा
ळे विद्याकुमारि ॥ नाव्य उजालो कळा कुसरि ॥ सारथ्य
विद्य सिहि परि ॥ अर्जुन संगिलाथ लि ॥५३॥ पार्थ वेक

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

॥श्री॥१४

(7A) विराट रीताशरसंधान॥नेमेनिश्चयेलक्षभेदन॥दक्षिपर्व
पाहताजालेज्ञान॥त्यासगुरुप्रसादे॥५४॥द्रसि
यावदोनिगोष्टी॥काळकैवानयानिकटी॥नकुळेमु
रगमासीयुगोटी॥शा[illegible]धनविद्या॥५५॥जिस्व
न्यावळेनिगुति॥फे[illegible]लाचक्राकृति॥सिध्यप
कवितावातगति॥मं[illegible]दावने॥५६॥व्याघ्रच्या
ळवलेगगनि॥तरोहि आदम्यसमुद्रजीवनीलसे
वाजदाउनीनयनी॥ऽच्युतबकरीन रायाचे॥५७॥
सहदेवम्हणेमहिषिधेनु॥वृषभदमनिक

Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

8

तिसु जाणु ॥ दोहनमंथनि परमनिपुनु ॥ शीश्य हो
ये द्वक्षाच्या ॥ ५८ ॥ द्रुक्छ ह्म द्रोमिसे रंध्रि ॥ पांचा
किखिसे वाकरि ॥ विराट भार्या गुणसुंदरि ॥ आय
थिनसुधे षष्ठा ॥ ५९ ॥ [illegible] रे वाणि उपाय ॥ दिव
संकटु धर्मराया ॥ मग [illegible] दि श्रीद्रुक्ष पाया ॥ सा
हिज दोनि चालि ॥ ६० ॥ [illegible] चालतां जे गजेठि ॥ विरा
उनगराखियवाठि ॥ स्मशान भूमिके चानिकठि ॥ वि
शाक वृक्ष शमीच्या ॥ ६१ ॥ अर्जुन हेले शस्त्रास्त्रे ॥ ये य
ठवावि पवित्रे ॥ ऋषिमंत्रिता महामंत्रे ॥ दक्षिका न्हा

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

8A

न पुउति ॥ ६२ ॥ खउतर मंत्रबीजाचे रूप ॥ पाहता
घात्रे दिसतिसर्पी ॥ स्वेयपाबाणियाकं प ॥ स्पर्शोकि
न्हिनसकति ॥ ६३ ॥ खउगवळीतुनीरच्याचे ॥ प्रळ्य
पावकाचि तपे ॥ पाहतास्त याचियेवायेशाकोळितिस्व
प्रभा ॥ ६४ ॥ म्रगवर्मिवे[illegible] निरुसि ॥ नकुकेउबिलि
च हावरोति ॥ जिक[illegible] हाति ॥ साध्य नव्हती
सर्वथा ॥ ६५ ॥ वृद्ध[illegible]लिवर ॥ तेथ बांधिले
संयंकर ॥ दुर्गधीस्त वन[illegible]नर ॥ समिपकोन्हिन
यति ॥ ६६ ॥ नगरप्रवेशिनरशा ॥ दुर्का ॥ दुर्गे प्रसादे
दरिद्रकाउाका ॥ दुर्गी भवतिविशाळा लोकांगालिवं
चिता ॥ ६७ ॥ धर्मराजकरीस्तवन ॥ विश्वमातनुज

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

१

नमन ॥ तुज वेगळे ब्रह्मज्ञान ॥ हे सर्वथा घडेना ॥ द्रुहि
ण ब्रह्मा शंकर आले हरी ॥ बाळके जन्मली तुझ्या उ
दरी ॥ वर्तती आपुले व्यापारी ॥ तुझिया आज्ञा जन
नियं ॥ ६९ ॥ तुझिया अंश [illegible] नादे रव ॥ ब्रह्मा जाला
चतुर्मुख ॥ लिंग पत [illegible] बके ॥ कपाळे पाडि
ला केला ॥ ७० ॥ शंकर अं [illegible] उलिंग ॥ शंखाक व्या
पिता महा रोग ॥ ते तु [illegible] आसा भंग ॥ अविद्येमा
ग वर्तता ॥ ७१ ॥ विष्णु सदेउनी बहु सोंग ॥ बहु
रूप दाविसी आंग ॥ ना गता वंदखिया मा ग ॥ स्म

६

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

विचार ध्यानवासिता केला ॥ ७४ ॥ कर न येते कर्म करणे ॥ पर्व

(१८) श्रेष्ठिवर्जिता राहाउने ॥ ततु विश्रवसा जाळे ॥ वेदि

क्षवनयथार्थी ॥ ७३ ॥ तो नामु तेधउला दाषु ॥ म्नणोनि

ओरुक्त र रम्य ब्रम्हसु ॥ अ[illegible] गउ निदृ पादिवेसु ॥ नि

शानासि अवदश ॥ ७[illegible]य. तो व्यक्त दिसे ॥ ततु

झद्विरत्व रूप कसे तुं झि[illegible]कांसे विस्र सकळ्यचा लि

जे ॥ ७५ ॥ तारा तुं स्वितुळ्या[illegible]मा ॥ गोरी भागवतीरोव

धर्मी ॥ वृज्ञादे बीइ या नामी ॥ कों ळिका च्चारि बोलि

जे ॥ ७६ ॥ जेथ हंसा लिप पावती ॥ त्री पाद गायत्री

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

देवमती॥सांख्यमतीतु प्रवर्ती॥आदिदालिव्या
पके॥७७॥तेअवतार घ्यहलि गोकुळि॥जन्म
लिस नंदाकुळी॥कौसुकला करलि होळि॥च्चे
घमागध आटिले॥[illegible]रे कालिय मर्दमु खिस्वि
स्तुति॥प्रत्यक्ष जाली[illegible] यक्ति॥मोळस्य शोलि
याहस्ति॥अश्वासित[illegible]बाळा॥७९॥वर्षये कव
सिजैयथे॥वैरीपावती अपजयाते॥पुढकोगा
ळमेदपिते॥सागरांत य काह्ला॥८०॥अभये द
उनिया हा॥लोचनात्रगोप्य रक्ष गवती॥पुळारा

10A

जसें भूमती ॥ धर्मराज पाळता ॥ ८१ ॥ वंदोनिया
आसिर्बचन ॥ म्हणे राया स्वस्ति कंल्याण ॥ सुपु
म्हणे कोठिले कोण ॥ की समर्थ येणें या ठाया ॥ ८२ ॥
दिससि सुर्याहुनी सेज्वळा ॥ आंगिरस्वयौ वि
कळा ॥ पृथ्वि स्वियंभु [illegible] श्वर आंगें ग्रास सि ॥ ८३ ॥
धर्म अनुवादे डासोन [illegible] पाद ध्यावें जनन ॥
अत्रीगोत्री मी ब्राह्मण ॥ होय आश्रित धर्माचा ॥ ८४ ॥
सभापंडित धर्मानिकर ॥ पांडव जाल्या राज्यभ्रष्ट ॥
तुधारीकि परम श्रेष्ट ॥ देखोनी आलो तुजपासी ॥ ८५ ॥

" Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

(11)

च्यासि वेद साक्षि शास्त्रे॥ परी स्वभ्रम असे आंगमसं
त्री॥ उपासना यंत्र तंत्री॥ बुद्धि कुंठित असेना॥६६॥ दु
खकु जाले च्युत खकु॥ असत्य भाषलिन सिवे बकुारत्न
परीक्षमी कुराळो॥ कंकन [illegible] पेमासे॥६७॥ जानवस्तु
चि परिक्षा॥ बहु कार्य व [illegible] पार दक्ष॥ राजा लक्षाम
ज अपक्ष॥ संगतिस्थि [illegible] असे॥६८॥ असे नव
सन मान धन॥ इच्छ [illegible] लेखनि वदिन॥ आतां स्व
स्व कराग्रियामन॥ मज संगति असाव॥६९॥ अ
नुवादनिम्न हगोष्टी॥ बैस विकाआस नानिकटी॥
पुढती चे जदरवद्दष्टी॥ सभा स्थानी नरेंद्र॥७०॥

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

विराट कन काव कातु त्यसर कु॥हाति कव विकळकन क पर्व
(11A) मुषकु॥द्वी खोउनिक टिंमंउकु॥पारिक्कायेत्र चो
मल्ला॥४॥जो हा रोतिन देंद्रोत्त मा॥मन् लमि बद्धव
सुदकमा॥धमोधुर [illegible] मात्त मागसिद्ध्य भाज्यानि
फजखि॥५॥त्यालिह्ये पे [illegible] चचाष्य॥जेन्न परमा
न्नेपाय सा॥श्यारवाक थि [illegible] मातुचासा॥वेधल्लावि
नवसंता॥६॥शा॥मिनसना [illegible] स गति॥बळा॥स्यास
अहोराति॥करीता मह्लास्वियापंक्ति॥मानदिजब
क्लिष्ट॥६४॥आतादेउनियापोडा॥चे रपाकक्रिय

A joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com